(E - 112)
हिलमिलकर सब भक्तों

(राग-जय जय जय सब मिलकर बोलो)

हिलमिलकर सब भक्तों चालो नंदीश्वर जिनधाममें.....४

अष्टम द्वीपमें जो है राजे
शाश्वत जहां जिनबिंब बिराजे;
दिव्य जिनालय बावन सोहे;
चहुं दिश वावडी पर्वत शोभे.....
महिमा अति भगवानकी (४) हिल० १

जिनबिंब की शोभा भारी
वीतरागता दर्शक प्यारी;
मानस्तंभ छे रत्नना भारी,
करे देव सेवा सुखकारी.....
जिनेश्वर भगवानकी.....(४) हिल० २

नंदीश्वर की महिमा गाऊं,
दर्शन-पूजन चित्तमें लाऊं;
पहुंचन को तो वहां न पाऊं,
हृदय स्थापी फिर फिर ध्याउं.....
वीतरागी भगवान को.....(४) हिल० ३

स्वर्णधाम की शोभा सारी,
कहान गुरु की वाणी प्यारी;

मानस्तंभ छे उन्नत भारी,
गंधकुटी दिसे मनोहारी;.....
—शोभा जिनवर–धामकी.....(४)
—शोभा सुवरन–धामकी....(४) हिल० ४

देशदेश के यात्री आकर,
गुरु–कहानका परिचय पाकर;
आत्मतत्त्वका प्रवचन सुनकर,
गाता है निज हृदय खोलकर,
–महिमा गुरुवर कहान की.....(४) हिल० ५